AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (E):2583:1348, (P): 2582:8800 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 01| January 2022| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 01-04

चांदागड का ऐतिहासिक स्थल चंदनखेडा-विश्लेषन

Dr. R. S. Mishra
Assistant Professor
Department of History
Rajiv Gandhi College of Art & Science, Wardha, M.S

सारांश:

चंदनखेड़ा ग्राम इ.स. 1619 से इ.स. 1704 तक चांदागड के गोंडराजाओं के शासनकाल मे प्रसिद्ध था। यह परगना वरोरा से 28 किलोमीटर पर स्थित है। वर्तमान में चंदनखेड़ा ग्राम भद्रावती तहसील से 24 किलोमीटर पर है। मान्यता प्राप्त भारतीय नक्शे में चंदनखेड़ा यह ग्राम वर्तमान मे मौजूद है और समुद्र तट से 207 मीटर ऊंचाई पर है। इ.स. 1619 से इ.स. 1704 के समय चांदागड के गोंडराजा बिरशहा आत्राम इनके चचेरे भाई गोविंदशहा इन्हें चंदनखेड़ा ग्राम एवं आसपास के 30-40 मैल परीघ क्षेत्र के भूमि पर जमींदार के तौर पर नियुक्त किया गया था। गोंड राजा बिरशहा इनके अपने दामाद के साथ पारिवारिक समस्याओं के कारण युद्ध हुआ। उनके जमाई देवगढ़ के राजपुत्र दुर्गपाल शाह थे। इन्हीं के साथ गोंड राजा बिरशहा का युद्ध हुआ इसमे जमाई दुर्गपाल शाह मारे गए। उनका सर काट कर राजा बिरशहा ने मां काली कंकाली देवी को दिए वचन के अनुसार अर्पित किया। उसी की प्रतिकृति पत्थर से बनाकर मंदिर के ऊपर स्थापित की गई है। इसी वजह से देवगढ़ के राजा बख्त बुलंद शाह ने अपने शूरवीर सरदार हीरामन को गुप्तचर बनाकर चांदागढ़ मे राजा बिरशहा का खून करने भेजा। उसके बाद इ.स. 1704 से अंग्रेजों का राज्य चांदागढ़ से समाप्त होने तक इन दोनों घरानों में मनस्वी दुश्मनी चलती रही।

प्रस्तावना:

चंदनखेड़ा यहां माधवशाह या माधवराव नाम का कोई राजा अस्तित्व में नहीं रहा है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं या लेख अस्तित्व में नहीं मिला है और ग्राम चंदनखेड़ा यह किसी भी प्रकार चांदागढ़ की उपराजधानी नहीं थी। कुछ अज्ञानी लोग स्वयं का नाम करने हेतु झूठा इतिहास छपवाकर और पूर्णता झूठी जानकारी जनता को भटकाने के लिए तैयार कर रहे

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. R. S. Mishra Department of History Rajiv Gandhi College of Art & Science, Wardha, M.S Email: mishrars85@gmail.com	

हैं। माधवराव या माधवशाह इस नाम का कोई राजा चंदनखेड़ा में हुआ ही नहीं । यह निर्विवाद सत्य है। इ.स. 1869 का सेटलमेंट रिपोर्ट चांदा, 1960 चांदा गॅझेटियर, अ.ज. राजूरकर लिखित चंद्रपुर का इतिहास तथा दक्षिण गोंडवाना की राजधानी चांदागढ़ इन ऐतिहासिक किताबों मे माधवराव या माधवशाह इनका नाम निर्देश कहीं नहीं है। चांदागढ़ छोड़कर किसी ग्राम में राजा नहीं रह सकता यह सत्य प्रमाणित है। हम जनता से आव्हान करते हैं कि इस दंतकथा या पाखंडी कथाओं पर विश्वास ना रखें। चंदनखेड़ा में सातवाहन राजा के रुपए मिले हैं वह किसी किसान की खेती में कुए के पास मिले हैं। जमींदार गोविंदशाह और चांदागढ़ के राजा बिरशहा के शिरपुर - आंध्रप्रदेश के साथ वाहन राजाओं के साथ व्यापार था और व्यापारियों को आंध्रा से चांदागढ़ आना-जाना रहता था। चांदागढ़ के राजा मूलतः तेलंगाना के शिरपुर कागजनगर यहां से थे। चांदा के राजा अपने व्यापार से समृद्ध एवं संपन्न हुए थे। उनके चचेरे भाई भी चांदा के व्यापारियों के साथ आंध्र प्रदेश के सातवाहन राज्य के साथ व्यापार करते थे।

संशोधनके उद्देश:

1. चंदनखेडा के प्राचिण इतिहास को समझना।
2. चंदनखेडा के गोंड राजांओंकी प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन।

विश्लेषन:

राजा बिरशहा इनकी धर्मपत्नी रानी हिराई ने अपने देवर के 3 वर्षीय बेटे को चांदागढ़ के राजगद्दी पर वारीस के तौर पर गोद लिया था। चंदनखेडा के जमिनदार गोविंदशहा वहीं चंदनखेडा के गढी मे रहते थे। जब उनका बेटा जो रानी हिराई द्वारा दत्तक पुत्र लिया गया था वह संज्ञान होने के बाद और चंद्रपुर के राजगद्दी पर आसनस्त होने के बाद उसने चंदनखेड़ा से अपने पिता को चांदागढ़ बुलाकर अपने पास रखा। उन्होने चंदनखेड़ा गढ़ी के संरक्षण हेतू सरदार माधवराव को नियुक्त किया था। जब गोविंदशहा आत्राम अपने बेटे के पास रहने के लिए गए तब से वर्तमान मे 21वीं सदी तक इसका इतिहास अज्ञात रहा है।

यह संपुर्णत: सत्य है की चंदनखेड़ा यह चांदागड (चंद्रपूर) के गोंड राजा की जमीनदारी रही है। वर्तमान के गोंडराजा डॉ. बिरशहा आत्राम इन्होंने इस गढी को प्रत्यक्ष भेंट देकर कुछ जानकारी संकलीत की। चंदनखेड़ा में गोंड परिवारों के 4-5 मकान है तथा अन्य आदिवासीयों के 10-11 मकान है। वर्तमान मे हमे जरूरत है की हमारे इतिहास को पहचाने, उसकी वास्तविक सच्चाई को समझे। हमारी आने वाली पिढीयों तक इतिहास की अमूल्य धरोहर को पहूंचाने की हमारी ही जिम्मेदारी है। डॉ.विक्रांतशहा आत्राम और श्री. डॉ. प्र. म. देशपांडे (औरंगाबाद) इन्होंने चंदनखेड़ा ग्राम के ऐतिहासिक वास्तु की पूरी जानकारी ली और जमिनदार गोविंदशहा द्वारा बनाई गई गढी के नमूने लिए ताकी पुरातत्व विभाग नागपुर से इसका कार्बन डेटिंग किया जाए। उसी प्रकार उन्होंने चंदनखेड़ा ग्राम के सरपंच श्रीमती डेविड बागेसर तथा ग्राम सदस्य आ.ग. बंतलवार इन से मुलाकात कर जानकारी ली। वहां गढी के पास जो पुतला बनाया गया है।

गोविंद शाह बापू आत्राम इनकी वंशावली कुछ इस प्रकार है।

चंदनखेड़ा में सातवाहन के रुपए मिले इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है इससे यह साबित नहीं होता कि चांदागढ़ मे सातवाहन का राज्य था। यह बात और विधान पुर्णत: निराधार पूर्ण है। प्राचीन समय मे आशिया खंड के भूभाग पर अनेक राजाओं के स्वतंत्र देश होते थे और उनके आपस में व्यापारी संबंध हुआ करते थे। इसीलिए व्यापारी अपने माल का लेनदेन आपस में करते थे। चंदनखेड़ा ग्राम के जमींदार यह खुद चांदागढ़ के गोंडराजा के रिश्तेदार थे। इसीलिए उनके पास इस प्रकार सिक्के मिलना यह कोई आश्चर्यकारक बात नहीं है।

वह गलत जानकारी के कारण बनाया गया है। इसमें चंदनखेड़ा के जनता का कोई दोष नहीं है। उस समय चांदागढ़ के राजा मुगलों के निकटत्म थे और वह अपना स्वतंत्र राज्य शासन संभालते थे। चांदागड के राजा-रानी मुगलों के जैसा पोशाक पहनते थे। इसके सबूत लेखक के पास है और जो पुतला चंदनखेड़ा में बनाया गया है वह सर्वथा मराठी लोगों की वेशभूषा में है। इससे यह साबित होता है की वर्तमान में जो पुतला है वह काल्पनिक है। चंदनखेडा ग्राम यह एतिहासीक नजरीयेंसे एक महत्तवपुर्ण स्थान है जो अनेक प्राचिन अवशेषों के जरीयें अपनी हकिकत बयांन कर रहा है।

इ.स ८७० मे यादव साम्राज्य का अस्त होने पर दक्षिण भूभागपर गोंड शुरविर सरदारोंने अपना राज्य स्थापित किया। इ.स १६९६ अगस्त २६ को गोंडराजा बिरशहा आत्राम का राज्यरोहन चाँदागड के राजगद्दी (सिंहासन) पर किया गया। इस समय दिल्ली के मोगल बादशहा औरंगजेब था। गोंडराजा स्व.बिरशहा महाराज के पिता की मृत्यू होने पर खाली सिंहासन पर राजा को बैठना अनिवार्य था। औरंगजेब बादशहा ने दिल्ली के बादशाही से चाँदागड राज सिंहासन पर राजा के ताजपोशी का फर्मान निकाला गया। औरंगजेब के विभागीय अधिकारी वजिर आसदखान ने बादशहा को खत लिखकर बिनती की है की ,चाँदागड के राजा कृष्णाशहा आत्राम का देहावसान (मृत्यू) हुवी है। और उनके बडे बेटे राजकुमार बिरशहा आत्राम यह राजगद्दी संभालने योग्य हो चुके है। इसलिऐ उनको चाँदागड की राजगद्दी पर राज्यरोहीत किया जाय। बादशहा औरंजेब ने इसे मान्यता देकर दिल्ली से राजफर्मान निकाला राजकुमार बिरशहा आत्राम को देडहजार मनसब, राजापदवी का फर्मानपत्र, हाथी, खिलती के वस्त्र, सोने का खंजीर दिया जाय।

निष्कर्ष:

इस प्रकार चाँदागड के सिंहासन पर गोंडराजा बिरशहा का राज्यरोहन हुवा। राजकुमार बिरशहा आत्राम चाँदागड का विवाह रानी हिराई से हुवा था। यह विषय संशोधित करने मे समय लगेगा की स्व. गोंडराजा बिरशहा महाराज की पत्नी रानी हिराई किस राजघराने की थी। गोंडवाना स्वदेश पत्रिका मे जो लेख प्रकाशित हुवा है, रानी हिराई फलाने-फलाने राजघराने की थी यह साबित नही हो सका है, वक्त के साथ सच्चाई स्पष्ट होगी। गोंडराजा बिरशहा की एक ही बेटी थी जो देवगड के दुर्गपाल को ब्याही थी। उन्हे बेटा नही था। गोंड समाज के रितीरिवाज से बेटे के लिऐ राजा दुसरी शादी कर रहा था इसीमे देवगड के राजा ने अपने गुप्तहेरों से चाँदागड के राजा बिरशहा आत्राम का शादी के समय पर ही खुन कर डाला। उस समय महाराज बिरशहा २८-३० साल के थे। इसलिऐ उसे प्रशासनिक कार्य करने मे समय नही मिला।

परंतू यह सत्यप्रमाण है की देवगड के राजा के साथ जो युध्द हुवा इसमे स्व. गोंडराजा बिरशहा आत्राम ने शुरता से युध्द जिता इतना ही नही वह माँ कालीकंकाली के भी परमभक्त थे। धार्मिकता से उन्होने अपना जिवन जिया। एक नेक राजा और जननायक के रूप मे उनकी ख्याती है। उनकी पत्नी रानी हिराई ने उनके मृत्यूपरांत चाँदागड का राजपाठ संभाला।

संदर्भ:

१) डॉ. तेगमपुरे मारोती : "आदिवासी विकास आणी वास्तव" चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, (२००९)
२) प्रा. गौतम निकम : "मूलनिवासींचे खच्चीकरण" विमलकिर्ती प्रकाशन, चाळीसगाव, (२०११)
३) डॉ. सौ. देवगांवकर शैलजा, डॉ. देवगांवकर एस. जी. : "आदिवासी विश्व" श्री. साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१५)
४) प्रा. सरकुंडे माधव : "आदिवासी अस्मितेचा शोध" देवयानी प्रकाशन, यवतमाळ, (२०११)
५) डॉ. सौ. देवगांवकर शैलजा, डॉ. देवगांवकर एस. जी. : "आदिवासी विश्व" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१५)
६) डॉ. आगलावे प्रदीप : "आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१२)

■ ■ ■